TEACHER'S HANDBOOK

# हिंदी व्याकरण–7

# उत्तर पुस्तिका

FRANKLIN

# सृष्टि हिन्दी व्याकरण-7

## PART - 7

### Ch-1 (भाषा और व्याकरण )

(क) विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति का बोलकर, सुनकर, लिखकर, पढ़कर आदान प्रदान करना भाषा कहलाता हैं।

(ख) यदि हम भाषा की बात करें तो भाषा के मुख्यतः दो भेद होते हैं:

मौखिक भाषा  लिखित भाषा

(ग) किसी भी भाषा को लिखने के विह्न या व्यवस्थित ढंग को लिपि कहते हैं।

(घ) भाषा द्वारा हम अपने बात दूसरों को बताते हैं तथा दूसरों की बात स्वयं समझते हैं, परन्तु बोली का क्षेत्र सीमित होता हैं।

1. चित्र 1- मौखिक भाषा  चित्र 2- लिखित भाषा
   चित्र 3- लिखित भाषा  चित्र 4- मौखिक भाषा
2. भाषा - कोंकणी, डोगरी, चीनी, बोडो, मैथिली
   बोली- हरियाणवी, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मेवाड़ी, कुमाऊंनी
3. (क) □  (ख) □  (ग) □  (घ) □
   (ड़) □  (च) □  (छ) ×  (ज) □
4. भाषा और बोली दोनों ही व्यक्ति के वाणी का एक प्रकार है, लेकिन इन दोनों में अंतर होता है। भाषा एक साधारण शब्दकोश होता है, जो अक्सर समूहों और संगठनों के माध्यम से व्यवहार में लाया जाता है। वह उन समूहों की आधारभूत संरचना होती है, जो एक संदेश को संचारित करने के लिए उपयोग की जाती है। वहीं दूसरी ओर बोली उस संदेश के रूप में व्यवहार की जाने वाली आवाज होती है, जो भाषा के व्यक्तिगत रूप में प्रयोग कीजाती है।
   उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति हिंदी भाषा में "मैं बाजार जा रहा हूं।" बोलता है, तो यह उसकी बोली होगी तथा शब्दों का समूह भाषा का उदाहरण होगा।
5. Do it yourself  6. Do it yourself
7. Do it yourself  8. Do it yourself

### Ch-2 (वर्ण विचार)

(क) संयुक्त व्यंजन दो एवं दो से अधिक वर्णों के मिलने से बने होते हैं। जैसे कि;

क्ष = क् + ष, त्र = त् + र, ज्ञ = ज् + ञ

और श्र = श् + र

(ख) वर्णों को व्यवस्थित करने के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

1. (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण और ध्वनि कहलाती है।

(ख) वर्ण या अक्षर, वह छोटी से छोटी ध्वनि इकाई है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते; जैसे- अ, इ, क, ख, ग आदि।

(ग) अयोगवाह 'अं' और 'अः को कहते हैं क्योंकि यह ना तो स्वर के अंतर्गत आते हैं और ना ही व्यंजन के अन्तर्गत आते हैं। लेकिन यह स्वर के अंत में अवश्य लगते हैं।

(घ) सयुंक्त व्यंजन के उदाहरण- मोक्ष, अक्षर, परीक्षा, क्षय, अध्यक्ष, कक्षा, क्षमा आदि।

द्वित्वव व्यंजन के उदाहरण - मक्का, पक्का, बच्चा, बिल्ली, चम्मच, पत्ता, सज्जा, लज्जा आदि।

2. 1. प्+अ+र्+ई+क्+ष्+आ  2. स्+अ+ह्+आ+य्+अ+त्+आ
   3. च्+अ+म्+म्+अ+च्+अ  4. प्+ अ + र्+ इ + श्+ र्+अ+म्+अ
   5. द्+ऐ+न्+इ+क्+अ

3. हस्व स्वर  पंचमाक्षर  द्वित्व व्यंजन
   संयुक्ताक्षर  दीर्घ स्वर  चवर्ग
   अंतः स्थ व्यंजन  अयोगवाह  प्लतु स्वर

4. क्ष, त्र, श्र, ज्ञ

5. (क) कर्ज़  (ख) ताज़ा  (ग) रोज़  (घ) सज़ा
   (ड़) साफ़  (च) काफ़िला  (छ) फ़रियाद  (ज) बॉल

6. (क) क्षत्रिय  (ख) क्षमा  (ग) त्रुटि  (घ) पत्रिका
   (ड़) ज्ञानी  (च) यज्ञ  (छ) क्षेत्र  (ज) त्रिशूल

7. Do it yourself  8. Do it yourself

## Ch-3 (शब्द विचार)

(क) जल, सूर्य

(ख) देशज

1. (क) जब किसी सार्थक शब्द का प्रयोग वाक्य में होता है तो उसे पद कहते हैं।

   (ख) रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं:

   1.रूढ़ शब्द  2.योगिक शब्द  3.योगरूढ़ शब्द

   (ग) 1.उत्पत्ति के आधार पर  2.रचना के आधार पर
   3.प्रयोग के आधार पर  4.अर्थ के आधार पर

   (घ) वे शब्द जिनकी उत्पत्ति के मूल का पता न हो परन्तु वे प्रचलन में हों। ऐसे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं। वे शब्द जो आम तौर पर क्षेत्रीय भाषा में प्रयोग किये जाते हैं। विदेशी भाषाओं से हिंदी में आये शब्दों को विदेशज शब्द कहा जाता है।

2. देशज, तत्सम, देशज, तद्भव, तत्सम, देशज, विदेशज, तत्सम, देशज,

विदेशज, देशज, तत्सम, विदेशज, तत्सम, विदेशज, देशज, विदेशज, विदेशज, तत्सम, देशज, विदेशज, देशज, विदेशज, तत्सम, विदेशज, देशज, तत्सम

3. मोर कुत्ता कान पत्ता सपना
   अचरज आंख दांत मक्खी
4. (क) देवालय=देव+आलय, राजपुरुष=राज+पुरुष
   (ख) लम्बोदर (लम्ब + उदर)= गणेश जी, दशानन (दश + आनन ) = रावण
   (ग) ज+ल= जल, ह+आ+थ= हाथ
   (घ) आयु, अवस्था
5. Do it yourself
6. Do it yourself
7. Do it yourself
8. Do it yourself

## Ch-4 (संज्ञा)

(क) भाववाचक संज्ञा

(ख) संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं:

व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा भाववाचक संज्ञा

(ग) जातिवाचक

1. (क) ऐसे शब्द जिन से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का पता चलता है, उन्हें संज्ञा कहा जाता है।
   (ख) ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी गुण, दोष, अवस्था, मन के भाव (हर्ष,खुशी,विशाल) आदि की जानकारी मिलती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   (ग) भाववाचक संज्ञाएँ पांच प्रकार के विकारी शब्दों से बनती हैं—(1) जातिवाचक संज्ञा से, (2) सर्वनाम से, (3) विशेषण से और (4) क्रिया से (5) अव्यय से।
   (घ) जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बच्चा ,जानवर, नदी, अध्यापक, बाजार, पहाड़, आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं, इसलिए यह जातिवाचक संज्ञा है
2. (क)व्यक्तिवाचक- हिन्दी राजभाषा (ख)जातिवाचक- तोते
   (ग)व्यक्तिवाचक- डॉ कलाम (घ)भाववाचक- मित्रता
   (ड) व्यक्तिवाचक- लाल बहादुर शास्त्री (च)जातिवाचक- पुस्तकें, पढ़ना
   (छ)व्यक्तिवाचक- माताजी, बढ़िया-भाववाचक
   (ज)व्यक्तिवाचक- दशहरी आम, मीठा- भाववाचक
   (ञ)व्यक्तिवाचक- कारगिल, शत्रु- भाववाचक
3. व्यक्तिवाचक-अमेरिका, महल

जातिवाचक-पर्वत, काबुली घोड़े, तोते
भाववाचक-मनुष्यता, उदासी, चंचलता

4. रुलाई, तरुणाई, नारीत्व, हरियाली, स्वत्व, निचला, कवित्व, प्यास, कुशलता, पुरुषत्व, नीलापन, अपनत्व, समीपता, दास्तव
5. भाववाचक , व्यक्तिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, व्यक्तिवाचक, व्यक्तिवाचक , व्यक्तिवाचक, भाववाचक, जातिवाचक, भाववाचक, जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, जातिवचक, व्यक्तिवाचक, व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक
6. Do it yourself. 7- Do it yourself. 8- Do it yourself.

## Ch-5 (लिंग)

(क) लिंग के दो भेद होते हैं।
पुल्लिंग स्त्रीलिंग
(ख) तितली, मकड़ी, कोयल, मक्खी, मछली आदि।

1. (क) शब्द के जिस रूप से स्त्री अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।
   (ख) ऐसे शब्द जो केवल पुरुषवाचक की जानकारी देते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहा जाता है।
   जैसे - वन में मोर नाच रहे हैं।
   (ग) ऐसे शब्द जिनके रूप से स्त्री जाति का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
   जैसे - हिंदी हमारी राजभाषा है।
2. (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग
   (ग) पुल्लिंग, पुल्लिंग (घ) पुल्लिंग, स्त्रीलिंग
   (ड़) पुल्लिंग, स्त्रीलिंग (च) पुल्लिंग, स्त्रीलिंग
3. दयावती, औरत, युवती, भवदीय, प्रिया, तपस्विनी, लेखिका, चालिका, लुहारिन, जाटिनी, भीलनी, दात्री
4. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग
5. (क) वक्त्री (ख) भीलनी (ग) मादा खरगोश
6. Do it yourself 7. Do it yourself

## Ch-6 (वचन)

(क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते है।
(ख) शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक अर्थात अनेक होने का बोध होता है,

उसे बहुवचन कहते हैं।

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके केवल एक का बोध होता है उसे वचन कहते हैं; जैसे- लड़की नाचती हैं।

(ख) शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक अर्थात अनेक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे- तोते मिर्च खा रहे हैं।

(ग) 'आ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'ए' जोड़कर

तोता - तोते

'आ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर

मात्रा - मात्राएँ

'अ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर

सड़क - सड़कें

'या' से समाप्त होने वाले शब्दों को 'याँ' जोड़कर

साड़ी - साड़ियाँ

'उ ऊ' से समापत होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर

बहू - बहूएँ

'इ ई' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'इयाँ' जोड़कर

सहेली - सहेलियाँ

'जन, वृंद, गण' आदि जोड़कर

मंत्री - मंत्रीगण गुरु - गुरुजन

2. बुढ़ियाँ, तितलियाँ, कुतियाँ, धेनुएँ, गत्ते, गन्नें, दीवारें, कविताएँ, सभाएँ, तोतें, घड़ें, बहूएँ
3. लता, चीज़, मोजे, छुट्टी, मूंछ, दीवार, गुरु, कविता, जुराब, बंदर, बहू, पतंग, तोता, लड़की, मित्र, नर्तक, पत्नी, मुर्गी
4. (क) पार्क में रामकथाएँ हो रही हैं। (ख) बंदरिये पेड़ पर बैठे हैं।
(ग) आकाश में पक्षी उड़ रहा है। (घ) सौरभ की पतंग ऊंची उड़ रही है।
5. मक्खियाँ, त्योहारों, चुनरी, दावतें, सुर्खी, चुहिया, अपना
6. Do it yourself. 7. Do it yourself.

## Ch-7 (सर्वनाम)

(क) सर्वनाम शब्दों के रूप में परिवर्तन निम्न प्रकार होता हैं-

'मैं' उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 'तुम' मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

'वह' अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम 'यह' निश्चयवाचक सर्वनाम

'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम

'जो' पुरुषवाचक सर्वनाम

(ख) ऐसे सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले तथा किसी अन्य के लिए

प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- तुम, मैं, वह आदि।

1. (क) संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले सभी शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

   (ख) सर्वनाम 6 प्रकार के होते हैं

   | | |
   |---|---|
   | पुरुषवाचक सर्वनाम | निश्चयवाचक सर्वनाम |
   | अनिश्चयवाचक सर्वनाम | संबंधवाचक सर्वनाम |
   | प्रश्नवाचक सर्वनाम | निजवाचक सर्वनाम |

   (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं

   उत्तम पुरुष  मध्यम पुरुष  अन्य पुरुष

   उत्तम पुरुष: सर्वनाम शब्द का प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है; जैसे मेरा, मुझे, हमारा।

   (घ) जो सर्वनाम शब्द वाक्यों में आए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बीच संबंध होने की जानकारी देते हैं; वह संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

2. (क) वह- पुरुषवाचक सर्वनाम  (ख) जो, वह - संबंधवाचक सर्वनाम
   (ग) आप - पुरुषवाचक सर्वनाम  (घ) कोई - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
   (ड़) वह, मेरे - पुरुषवाचक सर्वनाम  (च) अपनेआप - निजवाचक सर्वनाम
   (छ) मैं - पुरुषवाचक सर्वनाम
3. संबंधवाचक, अनिश्चयवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, पुरुषवाचक, प्रश्नवाचक
4. जिसकी लाठी उसकी भैंस।  उन्हें मेरा जन्मदिन याद नहीं।
   कौन यह कार्य करेगा?  क्या कुछ खाने को मिलेगा?
   किन्होंने आपको अपशब्द बोले?
5. तुमको, अपना, मेरी, किसी, अपने, तुमको
6. कुछ, स्वयं, कोई, हमारे
7. वह, उसी, वह, उस
8. तुम्हारी बहन का नाम क्या है?  शिकारी ने जो शेर मारा था वह जिंदा है।
   मुझे आम अच्छा लगते हैं।  हमको तुम्हारी कविता अच्छी लगी।
   जिनकी बहन अध्यापिका है।
9. (क) हम प्रतिदिन सैर को जाते हैं।
   (ख) हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे किसी को दुख पहुंचे।
   (ग) हम भारत के नागरिक हैं। हमारा कर्तव्य देश की रक्षा करना है।
10. Do it yourself  11. Do it yourself  12. Do it yourself

## Ch-8 (विशेषण)

(क) संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद होते हैं

निश्चित संख्यावाचक विशेषण　　अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ख) उदाहरण के लिए, विशेषण शब्द "लाल" के बारे में सोचें। यह शब्द संज्ञा "गुलाब" के गुण या रंग को बताता है।

1. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषताएं या गुण दोषों आदि को बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं;

गुणवाचक विशेषण　　संख्यावाचक विशेषण

परिमाणवाचक विशेषण　　सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण: ऐसे विशेषण अपने विशेष्य (संज्ञा/सर्वनाम) के गुणों-रूप रंग, आकार, स्वाद, गुण, दोष आदि का बोध कराते हैं।

जैसे- सुंदर घर

(ग) विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा शब्दों द्वारा, क्रिया शब्दों द्वारा, सर्वनाम शब्दों द्वारा, तथा अव्यय शब्दों द्वारा होती है।

(घ) जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की ओर संकेत करते हैं वह संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं।

2. (क) पके　(ख)एक　(ग) उस　(घ) सफ़ेदी

(ड़) कुछ　(च) थोड़ा　(छ) कुछ, मीठा　(ज) यहां

3. झगड़ालू, पढ़ाकू , पाक्षिक, पथरीला, घुमक्कड़, कमाऊ, राष्ट्रीय, बिकाऊ, निर्लज्ज, रंगीन, ऐतिहासिक, लालची, मानसिक, कौन सा

4. हरा, सुंदर　सफ़ेद, स्वस्थ्य　बड़ा, सुंदर

बढ़िया, सुंदर　ईमानदार, बुद्धिमान　विशाल, राष्ट्रीय

6. Do it yourself　7. Do it yourself

## Ch-9 (क्रिया)

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं;

सकर्मक क्रिया　　अकर्मक क्रिया

(ख) किसी कार्य का होना क्रिया कहलाता है।

1. (क) ऐसे शब्द जैसे किसी कार्य के करने या होने का पता चले, उन्हें क्रिया शब्द कहते हैं।

उदाहरण; बच्चे कक्षा में बैठे हैं।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं;

सकर्मक क्रिया　　अकर्मक क्रिया

(ग) सकर्मक का अर्थ है करण के साथ क्रिया क्रिया जिसके साथ कर्म जुड़ा हो तथा दूसरी तरफ़ जिस वाक्य में ऐसी क्रियाएं प्रयुक्त की जाएं, जिनके के लिए किसी भी कर्म का प्रयोग नहीं हुआ है, वे अकर्मक आती है।

2. (क) कर लिया (ख) गई हैं (ग) दिखाई दिए
   (घ) कर रहे (ड़) पिला रही (च) बरसता रहा
   (छ) बैठ गई (ज) सुरीली है (झ) बढ़ गई है
3. (क) है (ख) ढलता है (ग) अकर्मक
   (घ) संयुक्त क्रिया (ड़) नामधातु
4. पिलवाना, पढ़वाना, सुलवाना, लिखवाना, खुलवाना, दिलवाना, घुमवाना, धुलवाना, चलवाना
5. (क) हो रहे हैं (ख) बज रही हैं (ग) आ रहे हैं
   (घ) आया है (ड़) दिया है (च) आ गया
6. Do it yourself. 6. Do it yourself. 7. Do it yourself.

## Ch-10 (काल)

(क) क्रिया के जिस रूप से यह बात ज्ञात हो कि कोई कार्य बीते समय में पूरा हो चुका है, तो उसे भूतकाल कहते हैं।

(ख) क्रिया के वैसे स्वरूप जिससे पता चलता है कि वह क्रिया वर्तमान समय या मौजूदा समय में चल रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

1. (क) क्रिया के जिस रुप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहा जाता है।
   खेल रहा है। (वर्तमानकाल)
   वर्षा हुई थी। (भूतकाल)
   राम खेलेगा। (भविष्यतकाल)
   (ख) भविष्यतकाल में क्रिया के जिस किसी स्वरूप से उसके भविष्य या आने वाले समय में पूर्ण होने की जानकारी मिलती है, उसे भविष्यतकाल कहते हैं।
2. (क) कल पहाड़ी के पीछे शेर देखा जाएगा।
   (ख) 8 अक्टूबर को वायु सेना दिवस मनाया गया।
   (ग) पिताजी दफ़्तर से घर आ गए।
3. भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यत काल
   भविष्यत काल, भूतकाल, वर्तमानकाल
4. भविष्यत काल वर्तमान काल भविष्यत काल
   वर्तमान काल भविष्यत काल वर्तमान काल

5. वह खाना खा चुका है। मोहन यह काम कल करेगा।
वह घर जा चुका होगा। सोहन आज का मैच हारेगा।
आज घर पर दावत होनी है।

6. Do it yourself 7. Do it yourself

8. Do it yourself 9. Do it yourself

## Ch-11 (संधि)

(क) पुस्तक + आलय = पुस्तकालय (ख) आ + इ = ए (ग) अ + इ

1. (क) दो वर्णों के मेल से उनके रूप में जो बदलाव या परिवर्तन आता है, वह संधि कहलाता है।
महेंद्र = महा + इंद्र
(ख) संधि के तीन भेद होते हैं
स्वर संधि विसर्ग संधि व्यंजन संधि
(ग) व्यंजन वर्णों का व्यंजन वर्ण के साथ अथवा किसी स्वर के साथ में लोगों ने से विकार या परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
उदाहरण; जगत + ईश = जगदीश
(घ) स्वर संधि के पांच उपभेद होते हैं।
(ड़) विसर्ग के बाद किसी व्यंजन के साथ मेल होने पर विसर्ग संधि कहलाते हैं।
मनः + हर = मनोहर

2. लंका+ ईश, गुण संधि नदी+ अर्पण, यण संधि
महा+ ऋषि, गुण संधि सु+ आगत, यण संधि
जगत+ ईश, व्यंजन संधि शी:+ वाद, विसर्ग संधि
पो+ अन, अयादि संधि उत्+ ज्वल, विसर्ग संधि
उत्+ योग, विसर्ग संधि

3. शतीच्छन्द, गुण संधि निरस, विसर्ग संधि
वाङ्गमय, व्यंजन संधि महालय, स्वर संधि
कपीश, दीर्घ संधि महेश्वर्य, वृद्धि संधि

4. दीर्घ संधि, यण संधि, दीर्घ संधि, गुण संधि, यण संधि, अयादि संधि, अयादि संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि

5. (क), (ग), (ग), (घ)

6. Do it yourself 7. Do it yourself

## Ch-12 (समास)

(क) चौराहा- चार राहों का समय तिरंगा- तीन रंगों का समूह
नवग्रह- नौ ग्रहों का समूह

(ख) अव्ययीभाव समास

1. (क) जब दो या इससे अधिक शब्दों के मेल से एक नए शब्द का सृजन होता है, तो उस शब्द को समास कहते हैं।
   उदहारण; राजा का पुत्र- राजपूत्र
   (ख) जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं एवं सामासिक पदों का विग्रह करने पर और अथवा या आदि समुच्चयबोधक ओ से जुड़े हो साथ ही उनके बीच योजक चिन्ह हो, उसे द्वंद समास कहते है।
   उदाहरण; पाप - पुण्य = पाप या पुण्य
   (ग) रेखांकित= रेखा से अंकित
   (घ) बहुव्रीहि समास में दोनों पद प्रधान ना होकर कोई तीसरा पद प्रधान होता है और उसी की विशेषता बताई जाती है।
   कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण तथा विशेष्य का संबंध होता है समास विग्रह करने पर ही अंतर पता चलता है।
2. पंजाब, द्विगु समास — आयात और निर्यात, द्वंद समास
   गगनचुंबी, तत्पुरुष समास — गुरु दक्षिणा, तत्पुरुष समास
   घनश्याम, कर्मधारय समास — पंचरत्न, द्विगु समास
   लंबोदर, बहुव्रीहि समास
3. iv, iv, i, ii, ii, ii
4. नर या नारी, द्वंद्व समास
   महान है जो आत्मा, कर्मधारय समास
   नौ ग्रहों का समय, द्विगु समास
   दंड जैसी भुजा, कर्मधारय समास
   आधा है जो पका, कर्मधारय समास
   वन में वास, कर्मधारय समास
   देह रूपी लता, कर्मधारय समास
5. Do it yourself
6. Do it yourself
7. Do it yourself

## Ch-13 (कारक)

(क) ऐसे शब्द जिनसे क्रिया के कर्म का पता चलता है, उसे कर्मकार कहते हैं।

(ख) यह राधा की पुस्तक है।

1. (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध का पता चलता है, उसे कारक करते हैं।
   (ख) कर्म कारक में परसर्ग कभी प्राप्त होता है और कभी नहीं भी।
   संप्रदान कारक में परसर्ग कर्ता/ क्रिया के साथ होता है एवं इसमें देने का भाव होता है।

(ग) ऐसे शब्द जिनसे पता चले की क्रिया को संपन्न करने में करता ने किस साधन का प्रयोग किया है, उसे करण कारक कहते हैं।

संज्ञा और सर्वनाम के वैसे रूप जिससे क्रिया द्वारा अलग होने का भाव स्पष्ट होता है, वहां अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है।

(घ) इस कारक में किसी संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा सर्वनाम या वस्तु से संबंध बताएं जाए, वहां संबंध कारक का प्रयोग किया जाता है।

जैसे ; यह राधा की पुस्तक है।

2. कर्ता कारक- ने — कर्म कारक- को
करण कारक- से, के द्वारा — संप्रदान कारक- को, के लिए
अपादान कारक- से (अलग होने) — संबंध कारक- का, के, की, रा, रे, री, ना
अधिकरण कारक- में, पर — संबोधन कारक- हे, अरे

3. माताजी ने सब्जी बनाई। — दिव्या स्नेहा को कलम देती है।
चम्मच से खीर खाओ। — यह श्याम कलम की कलम है।
पेड़ से आम गिरते हैं। — हे ईश्वर! यह क्या हो गया।

4. में, से, द्वारा, पर, ने, अरे

5. (क)से, करण कारक — (ख)में, अधिकरण कारक
(ग)पर , अधिकरण कारक — (घ)ना, संबंध कारक
(ड़)को, कर्म कारक — (च)हे, संबोधन कारक
(छ)से, करण कारक — (ज)के, संबंध कारक, पर, अधिकरण कारक
(झ)की, के, संबंध कारक — (ञ)में, अधिकरण कारक

6. Do it yourself 7. Do it yourself 8. Do it yourself

## Ch-14 (उपसर्ग)

(क) खुश, भर (ख) स्वदेश, स्वराज्य

1. (क)ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लगकर उनका अर्थ बदल देते हैं और नया शब्द बनाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

उदहारण; खुश+ बू = खुशबू

(ख) हिंदी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग प्रयोग किए जाते हैं।

2. नि+डर — अध+ गति — प्र+ सन्न — अप+ मान
निस+ संकोच — बिला+ वजह — परा+ जय — सम+ योग
उत+ पति — बहिर+ गमन — सह+ पाठी

3. अवज्ञा, अवशेष, अवतार — सुलभ, सुपुत्र, शुभम
परदेस, परोपकार, परलोक — सरदार, सरपंच, सरकार
नालायक, नापसंद, नाराज — अधखिला, अधपका, अधमरा
बहिरंग, बहिर्वार, बहिर्जगत। — स्वयंसेवी, स्वयंवर, स्वयंसेवक

4. सं, ला, पर, अनु

5. बद, स, अध, नि, दुर, पुनः, अंतः परि, विर, सं, नि, सम, बे, अनु, प्र

6. निर+ जीव= निर्जीव उत+ कर्ष =उत्कर्ष
अप+ मान= अपमान सु+ आगत= स्वागत
अधः+ पतन= अध: पतन अंतर+राष्ट्रीय= अंतर्राष्ट्रीय
ला+ परवाही= लापरवाही नि+ रोग= निरोग
सम+ विधान= संविधान निस+ अर्ग= निसर्ग
परि+आवरण= पर्यावरण दुस+ साहस= दुस्साहस
बे+ ईमान = बेईमान सत+पुरूष= सत्पुरुष

7. Do it yourself 8. Do it yourself 9. Do it yourself

## Ch-15 (प्रत्यय)

(क) कृत प्रत्यय के पांच भेद होते हैं। (ख) मथनी, चटनी

1. (क)मूल शब्दों के अंत में लगने वाले शब्दांश जिनसे नए शब्द बनाए जाते हैं, वह प्रत्येक कह जाते हैं।
उदहारण; लड़+ आई= लड़ाई
(ख) क्रिया के मूल रूप के साथ संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय कृत प्रत्यय कहलाते हैं। उदहारण; दिख+ आवा= दिखावा
(ग) ऐसे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में लगते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
उदहारण; सोना+ आर= सुनार

| (घ) कृत प्रत्यय | तद्धित प्रत्यय | |
|---|---|---|
| 2. लिखावट, बनावट | करनी, चटनी | बिचौन, बिछौना |
| पानवाला, सब्जीवाला | चमकीला रंगीला | सुनार, कुम्हार |
| सड़ियल, मरियल | उपजाऊ, बिकाऊ | कटौती, मनौती |
| पत्रकार, कहानीकार | जातीय, स्वर्गीय | मुंबईया, जयपुरिया |
| 3. दया+ वान | भारत+ ईय | बच+ अन |
| डिब+ इया | जादू+ गर | सोना+ आर |
| गर्व+ इला | धन+ वान | मानव+ ता |
| चिकना+ आहट | जंगल+ ई | बबु+ आइन |

4. उड़ान, नर्तकी, मक्खियां, दुकानदार, सुरीला, सेठानी, साप्ताहिक, लिखावट

5. iii, i, ii, iv, iii

6. Do it yourself 7. Do it yourself

## Ch-16 (मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ)

(क) अपना सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करते हैं।

(ख) कहावतें

1. (क) वे वाक्यांश या शब्द समूह होते हैं जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करते हैं, उन्हें हम मुहावरा कहते हैं।

   (ख) लोकोक्तियां लोक संसार में प्रचलित युक्तियां होती हैं जो अपने दीर्घकालीन अनुभवों पर आधारित होती हैं, इसीलिए उन्हें कहावतें भी कहा जाता है।

   उदाहरण; अंधों में काना राजा

2. तिल का ताड़ बनना — आसमान सिर पर उठाना
   अक्ल के घोड़े दौड़ना — नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली
   थाली का बैंगन

3. बहुत काम करना — निश्चिंत हो जाना
   अनुभवी होना — अवाक रह जाना
   क्रोध को और बढ़ाना — चाल न चलना
   खुशियां मनाना — शर्मसार होना
   कठिन कार्य करना

4. (क) अपने मुंह मियां मिट्ठू तो सभी बनते हैं लेकिन एक ऐसा व्यक्ति है जो हमेशा दूसरों की प्रशंसा करता है।

   (ख) विशाल की दुकान से कभी कुछ खरीदना मत भाव ऊंची दुकान फीके पकवान मिलता है।

   (ग) मैं तुम्हारा भरोसा कैसे करूं जब देखो तब गिरगिट की तरह रंग बदलते हो।

   (घ) राहुल गांधी ने रैली में जैसे ही बोलना शुरू किया वैसे ही सभी ने मोदी जिंदाबाद के नारे लगाना शुरू कर दिया राहुल के तो सिर मुंडाते ही ओले पड़ गए।

5. Do it yourself

6. Do it yourself

## Ch-17 (शब्द-भंडार)

(क) पर्यायवाची समानार्थक शब्द, विलोम विपरीतार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द, वाक्यांश बोधक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द।

(ख) कभी-कभी किसी बात को थोड़ा विस्तार में समझाने के बजाय एक शब्द कहने से ही बात समझ में आ जाती है। वही एक शब्द वाक्यांश बोधक शब्द कहलाते हैं।

1. (क) शब्द-भंडार शब्दावली का विस्तार करने, नए शब्दों के अर्थ जानने और शब्दों के उपयोग और अर्थों के बीच का अंतर समझने में मदद करता है।
(ख) ऐसे शब्द जो किसी वाक्यांश के बदले बोले जाते हैं, वाक्यांश बोधक शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण;
बहुत तेज बुद्धि वाला-कुशाग्रबुद्धि
(ग) ऐसे शब्द जो सुनने में तो लगभग समान लगे किंतु उनके अर्थ भिन्न होते हो उन्हें श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।
जैसे; अनु -पीछे , अणु -कण
(घ) ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, उनको अनेकार्थी शब्द कहते हैं। उदाहरण; मत - वोट, राय, धर्म

2. दुख, उथला, अनुपस्थित, प्रदान अनावृष्टि, सुक्ष्म, मलिन
लघु, निरामिष, अनुपयोगी, अनेकता, अनिच्छा, विषाद, स्थिर

3. शेर, वनराज — गज, मतंग — चिड़िया, पंछी
समीर, वायु — पाषाण, पाहन — मेहमान, पाहुना
कोकिला, श्यामा — कटार, खंजर — अंशु, रश्मि
वानर, कपि — अनादर, निरादर — कंचन, कुंदन

4. बादल, हथौड़ा, लोहा — आम का फल, रंज, सामान्य
पिछला, पहले, एक दिशा

5. कुलीन, पाक्षिक, जितेंद्रिय, जिज्ञासु, अनुपम, शुभचिंतक

6. पंकज, जलज, कमल — वृक्ष, पेड़, दरख्त

7. जागरण, जल, सदृश्य, निरक्षर, मृत्यु, अनुकूल, दुरात्मा, माफी

8. दूरी की माप, खजाना — खदान, पठान
निर्धन, हड्डियों का ढांचा — हथियार, सैद्धांतिक विषय
कंजूस, तलवार — दूसरा,सुगंध

9. Do it yourself
10. Do it yourself
11. Do it yourself
12. Do it yourself
13. Do it yourself

## Ch-18 (शब्द-भंडार)

(क) वाक्य के रचना के आधार पर तीन भेद होते हैं।
सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्य
(ख) पदों के सार्थक समूह से बने वाक्य कहलाते हैं।

1. (क) वाक्य सार्थक शब्दों के समूह को कहते हैं।
उदाहरण; गुड़िया रस्सी कूद रही है।
(ख) वाक्य के 2 अंग होते हैं- उद्देश्य तथा विधेय
वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है वह उद्देश्य कहा जाता है।
रविंद्र मैदान में खेल रहा है।
(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद हैं
विधानवाचक वाक्य, निषेधात्मक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, आज्ञा वाचक वाक्य, विस्मयादिवाचक वाक्य, संदेह वाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य
(घ) अनेक कारणों से वाक्य में अशुद्धियां आती है।
उदाहरण;
कृपया पांच सौ रूपए देने की कृपा करें।
कृपया पांच सौ रूपए दें।
2. जो करेगा वो भरेगा।
शादी में अनेक लोग आए हुए थे।
सब कागज में पर रखे हैं मैं घर जाता हूं।
गांधी जी देश के राष्ट्रपिता है।
क्या तुम्हें नहीं मालूम तुम्हें क्या करना है?
प्रिया और रानी बहुत अच्छी दोस्त है।
श्याम कल शहर जाएगा।
कोयल मीठा गाती है।
3.

| उद्देश्य | विधेय |
|---|---|
| रामू, | बस से गांव जा रहा है। |
| माताजी, | सीरियल देखने लगी। |
| मिठाईवाला, | पेड़े बेच रहा है। |

4. Do it yourself
5. Do it yourself
6. Do it yourself
7. Do it yourself

## Ch-19 (अशुद्ध वाक्यों का शोधन)

1. (क) वाक्यों में अशुद्धियां दो कारणों से होती है वर्तनी एवं वाक्यों से संबंधित।
(ख) अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि- समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जैसे;
खरगोश को काटकर गाजर दो।
खरगोश को गाजर काट कर दो।

(ग)सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ-संज्ञा की तरह मनुष्य सर्वनाम में भी पुरुष, लिंग, वचन आदि का अनुचित प्रयोग कर देते हैं जिससे वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

जैसे;

मैं मेरे घर जाता है।

मैं अपने घर जाता हूं।

(घ) वाक्यों में कारक संबंधी गलत प्रयोग भी किए जाते हैं, जिस कारण वाक्य अशुद्ध हो जाता है। इन अशुद्धियों को कारक संबंधी अशुद्धियाँ कहा जाता है।

जैसे;

आपको एक काम है।

आपसे एक काम है।

2. छत पर मत सोइए।
मैं कमरे में पहुंच गया।
तुम्हारे हस्ताक्षर सुंदर हैं।
मैंने अनेक पुस्तकें लिखे हैं।
तुम अपने गांव जाओ।
रोगी को सेब काटकर खिलाइए।
मुझे पढ़ाई करनी है।
मुझे गाय का गर्म दूध पीना है।
पूरे स्कूल भर में सफेदे का कार्य हो रहा है।
यहां आंखों का मुफ्त ऑपरेशन किया जाता है।
भोजन कर लीजिए मुझसे बेफिजूल बातें मत करिए।
उसके आंसू निकल आए।

3. ये बच्चे गाना गा रहे हैं। — लगता है आज पानी बरसेगा।
मुझे रोहतक जाना है। — तुम नए कपड़े पहन लो।
आप यहां पर बैठिए। — उसे पुस्तक नहीं चाहिए।
पेड़ पर तोता बैठे हैं। — उनके नाम को लोग याद करेंगे।

4. (क) × (ख) ✓ (ग) × (घ) × (ड़) ✓ (च)×
(छ) × (ज) ✓ (झ)× (ञ)×

5. Do it yourself 6. Do it yourself 7. Do it yourself

## Ch-20 (चित्र वर्णन)

Do it yourself